परीतिन
की शादी
Sahitya Junction Official

श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः

भूमिका

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

अप्सरा , यक्षिणी , प्रेतनी , पिशाचिनी , जैसी इतर योनियाँ और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रहस्यमय और रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , किसी भी प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें और इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

परेतिन की शादी

परेतिन यानी प्रेतीन अर्थात महिला प्रेत छत्तीसगढ़ के गांव में उसे यही कहा जाता है । मैं भी उसी प्रदेश की कथा के आधार पर इस काल्पनिक कहानी को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं ।

छत्तीसगढ़ की बड़ी नदियों में से एक है । शिवनाथ नदी । उसी नदी के तट पर बसा हुआ एक गांव है चंदखुरी ।

इस गांव में यह घटना आज से लगभग 100 साल पहले घटित हुई थी । अब यह कितना सच है और कितना झूठ इसकी समीक्षा आप स्वयं करें |

आगे रामलाल की जुबानी सुनें ....

मैं यानी रामलाल चंदखुरी का निवासी था । यह उस समय की बात है जब मेरी उम्र लगभग 22 साल की थी । आज से 100 साल पहले भारत के गांवों की दशा कैसी थी यह आप सभी जानते हैं । चंदखुरी भी इसका अपवाद नहीं था । गांव में कुल मिलाकर 40 घर थे । कुल मिलाकर डेढ़ सौ लोग रहते थे । उसी में से एक था राम लाल यानी मैं .....

मैं चरवाहा था । गांव भर की गायों को चराने के लिए ले जाता था । दिन भर उन्हें चराने के बाद वापस गांव में लेकर आ जाता । यही मेरा नित्य का काम था । इस काम के बदले गांव के प्रत्येक घर से मुझे जीने लायक अन्न और वस्त्र मिल जाता था । हर साल होने वाली फसल का एक हिस्सा मुझे मिलता था । जिससे मेरे खाने-पीने की व्यवस्था हो जाती ।

मेरे पिता बचपन में ही खत्म हो गए थे । मैं अपनी बूढ़ी मां के साथ छपर वाले घर में रहता था । बूढ़ी मां भी लगातार बीमार रहती थी । उस साल गर्मी के दिनों में उसकी तबीयत ज्यादा खराब हुई और वह भगवान को प्यारी हो गई । अब मैं अकेला रह गया ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

रहस्यमय रोशनी

गर्मी के दिन थे । घास फूस लगभग खत्म हो चली थी और चराने के लिए ज्यादा जगह भी नहीं बची । गर्मी बढ़ जाने की वजह से धूप तेज हो जाती थी और दोपहर के समय गायों को छांव में इकट्ठा करके मैं भी विश्राम करता था । ऐसे ही दिन गुजर रहे थे.....

एक रात को मैं शौच के लिए निकला । दिन भर बाहर भटकते रहने के कारण मुझे किसी चीज का डर नहीं था । गांव वाले जिस मशान की ओर शाम के बाद जाने से भी झिझकते थे , मैं बड़ी आसानी से उस मसान में रात को भी चला जाता था । मसान में कभी-कभी अजीब सी रोशनी दिखती थी | आमतौर पर जब मैं निकलता था तो यह रोशनी दिखाई नहीं देती थी | लेकिन ! साल में एकाध बार ऐसा होता था कि यह अजीब सी रोशनी मुझे दिखती थी | कुछ डर और कुछ लापरवाही की वजह से और कुछ आलस्य की वजह से मैंने कभी मसान की तरफ रुख नहीं किया और ना ही कभी जानने की कोशिश की कि वह रोशनी क्या है ?

एक आध बार मैंने अपनी मां से इस बारे में चर्चा की तो उन्होंने अपनी कसम देकर उस रोशनी की तरफ जाने से मना कर दिया । जैसा कि आप लोग जानते होंगे उस जमाने में कसम का बड़ा महत्व होता था और उसकी कीमत किसी लिखे दस्तावेज से कम नहीं हुआ करती थी | किसी ने अगर किसी को कसम दी हुई है तो वह जान दे देता था लेकिन कसम नहीं तोड़ता था | अब मां रही नहीं तो कसम भी खत्म हो गई थी । इसलिए वह जिज्ञासा शांत करने का बढ़िया समय था | मैं अक्सर रात को शौच के बहाने उसी तरफ जाता था ताकि वह रोशनी दिख जाए और इस बार उसका पूरा दर्शन कर सकूं !

यह जान सकूं कि आखिर वह है क्या चीज़ ?

उस दिन शौच करने के बाद मशान से आती हुई रोशनी को देखकर मुझे लगा कि वहां कुछ हो रहा है ...
मुझे ऐसा लगा कि वहां कोई बैठा है और आग जल रही है.....

मेरी उत्सुकता जगी !

मैं धीरे-धीरे दवे पाव मशान की ओर बढ़ चला । वहां पहुंचकर मैंने देखा कि एक महिला चूल्हा जलाकर कुछ बना रही हैं ।

उसको देख कर आश्चर्य हुआ कि इतनी रात गए यह महिला श्मशान में क्या कर रही है ?

फिर मुझे आभास हुआ कि हो ना हो यह महिला परेतिन तो नहीं है ?

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मेरे आगे पीछे कोई नहीं था इसलिए ज्यादा चिंता नहीं करता था । मैंने सोचा कि क्यों ना और करीब से देखा जाए । मुझे इंसानों से डर नहीं लगता था लेकिन भूत प्रेत के नाम से अच्छे अच्छों की हवा निकल जाती है और मैं भी कोई अपवाद नहीं था । इसलिए डरते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा और उनके पास जा पहुंचा .....

वह एक बेहद सुंदर युवा महिला थी ! मेरे वहां पहुंचने के बाद महिला ने मुझे देख लिया । महिला ने मुझसे पूछा - क्या रोटी खाएगा ?

खास भूख तो नहीं थी फिर भी मैंने सहमति में सर हिलाया । वह युवती 20-22 वर्ष की रही होंगी । उसने घाघरा चोली पहना हुआ था और ऊपर से कंधे पर चुनरी ली हुई थी । मैं उसके साथ ही जमीन पर बैठ गया | उसने रोटी तथा सब्जी परोसी । मैं बैठकर खाता गया .....

मैं खाने के मामले में बड़ा ही शातिर था । जब खाने बैठता था तो चार पांच लोगों का खाना अकेला खा जाता । इसलिए आमतौर पर लोग मुझे अपने घर पर खाने पर बुलाने से हिचकते थे । मां के गुजर जाने के बाद कामचलाऊ खाना बना कर खाना रोज की आदत थी । इसलिए स्वादिष्ट भोजन बहुत प्रिय था.....

मैं दबा कर रोटियां खाता गया ..... लगभग 40 रोटी खाने के बाद मेरा पेट भरा । मैंने तृप्ति भरी डकार ली । मेरे बाद वह भोजन करने के लिए बैठ गई । मैंने उससे बात करना चाहा ..... लेकिन उसने इशारे से मुझे मना कर दिया । उसने भोजन समाप्त किया ।

हाथ धोने के बाद मुझसे पूछा - क्या तु साथ चलेगा ? रोज तुझे ऐसे ही खाना खिलाएंगे ।

भोजन मेरी कमजोरी था और जो भोजन उसने मुझे खिलाया था वैसा मैंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं खाया था इसलिए मैंने तुरंत हामी भर दी । मेरी हामी भरते ही उसने अपनी चुनरी निकाली और मेरे ऊपर डाल दी । चुनरी डालते ही मैं बेहोश हो गया .....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

परेतिन का राजमहल

अगले दिन सुबह जब मेरी नींद खुली । मैंने अपने आप को एक महल जैसे कमरे में पाया । उस कमरे में सुख सुविधा की सारी चीजें मौजूद थी । मैं एक बेहद शानदार पलंग पर लेटा हुआ था । जिसमें बहुत खूबसूरत नक्काशी की हुई थी । उस पर सुनहरे रंग की चादर बिछी थी । उस रेशमी चादर को देख कर ऐसा लगता था जैसे किसी राजा का बेडरूम हो । मेरे लिए यह किसी स्वप्न जैसा था । मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि यह कहां गया । तभी कमरे में वह सुंदर युवति आई मुझे देखकर वह खिलखिला कर हंस पड़ी .....

बोली - तुम उठ गए । चलो तुम्हें स्नान कराएंगे ।

मैने पूछने के लिए जैसे ही मुंह खोला | उसने इशारे से मुझे मना कर दिया | मैं चुपचाप उसके पीछे चल पड़ा । उसने आवाज लगाई दो अधेड़ उम्र के आदमी प्रकट हुए और मुझे स्नानागार तक लेकर गए । मैंने उनसे बात करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने भी इशारे से मुझे मना कर दिया | मैंने भी सोचा कि अपने बाप का क्या जाता है ? मजा तो ले ही लो | आगे देखते हैं क्या होगा | यह सोचकर मैं भी निश्चिंत हो गया क्योंकि मेरे पास खोने के लिए तो कुछ भी नहीं था | मेरे पास ना तो अपना कोई परिवार बचा था और ना ही मेरी कोई संपत्ति ही थी | ले देकर एक झोपड़ी थी जो मैं जब चाहे फिर से नई बना सकता था | जब किसी के पास होने के लिए कुछ नहीं होता है तो वह रिस्क लेने के लिए तैयार हो जाता है | मैं भी शायद उसी स्थिति में था | इसलिए बहुत ज्यादा विचलित नहीं था और यह सोच रहा था की जो होगा देखा जाएगा .....

उन्होंने एक चांदी के बने टब जैसे गोलाकार बर्तन में मुझे बैठाया | उसमें सोने की स्टूल लगी हुई थी | उस पर बैठाकर ठंडे खुशबूदार पानी से मुझे स्नान कराया गया । उसके बाद दोनों ने मुझे तौलिए से पोछा और नए वस्त्र पहनने के लिए दिए | यह वस्त्र भी किसी राजा को मात देने वाले वस्त्र थे | रेशमी रंग के सोने की कढ़ाई वाले चमचमाते हुए वस्त्र ! जैसे अभी अभी उनको सीला गया हो । मैंने उसे पहना और वह बिल्कुल मेरी ही साइज के थे । ऐसा लगा ! जैसे नाप लेकर सीले गए हो ।

तभी आवाज आई - आओ चलें ....

मैंने मुड़ कर देखा तो वही सुंदर युवती किसी राजकुमारी के जैसे परिधान में खड़ी थी | मैं मंत्रमुग्ध सा उसकी ओर बढ़ चला | उसने मेरा हाथ पकड़ा और आगे बढ़ गई | वो मुझे एक बड़े से डाइनिंग टेबल पर लेकर गई । उस टेबल पर ढेर सारे पकवान और खाद्य सामग्रियां

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

लगी हुई थी । मैंने पहली बार ऐसा छप्पन भोग देखा था । जिसमें कई प्रकार की मिठाईयां विभिन्न प्रकार के फल और अलग-अलग खाने की सामग्रियां रखी हुई थी ।

यह सब देख कर मेरी आत्मा तक ललचा गई | मैं यह सोच सोच कर प्रसन्न होने लगा कि मुझे यह सब खाने को मिलेगा । मैं आगे बढ़ने लगा तभी उसी ने मेरा हाथ पकड़ कर रोक लिया । मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उसकी ओर देखा ....

उसने कहा - यह सब तेरा है, लेकिन तुझे एक शर्त माननी होगी ।

मैं तो भरपेट खाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था । मैंने कहा - ठीक है मैं तुम्हारी शर्त मानने को तैयार हूं । बताओ तुम्हारी शर्त क्या है ?

महिला ने कहा - तुम्हें भैरू बाबा को हमारे पास लेकर आना होगा …

यह मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी, क्योंकि भैरू बाबा से मैं अच्छी तरह परिचित था | हमारी उम्र में बहुत बड़ा फ़ासला होने के बावजूद एक प्रकार से हम दोनों मित्र जैसे थे । बचपन से ही मुझे बैगा बाबा से अलग ही लगाव था | पिताजी के मरने के बाद उनके दोस्त होने के नाते भैरू बाबा हमेशा जरूरत पड़ने पर हमारी मदद भी करता था | और मुझे अपने साथ घुमाने भी ले जाता था ।

लेकिन ! मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि उस युवती को भैरू बाबा से भला क्या काम हो सकता है ?
इसलिए मैंने भी उससे पूछ ही लिया - तुम भैरू बाबा से क्यों मिलना चाहती हो ?और अगर उसको बुलाना चाहती हो तो तुम भी जाकर बुला सकती हो । वह तो किसी के भी बुलाने से आ जाते हैं । फिर मुझे बुलाने के लिए क्यों बोल रही हो?

उसने कहा - मैं अगर बुला सकती तो तुमसे नहीं कहती | अब तुम देख लो | अगर इस भोजन का मजा लेना है तो भैरू बाबा को मेरे पास तुम को लाना पड़ेगा |

एक चरवाहे के बराबर ही बुद्धि मेरे पास भी थी | मैंने सोचा की बाबा को बुलाकर लाना कोई बड़ी बात तो है नहीं और मैं बुलाऊंगा तो बाबा तो आ ही जाएंगे | हो सकता है इसकी कोई समस्या हो | उसका हल निकालना चाहती हो | मैंने हामी भर दी |

मेरे हामी भरने के बाद वह मुझे लेकर उस टेबल पर ले आई | तब तक दोनों अधेड़ उम्र के व्यक्ति भी वहां पर सेवा के लिए उपस्थित हो चुके थे | मेरे लिए यह बड़ी अजीब सी बात की क्योंकि वे दोनों अचानक गायब हो जाते थे और अचानक से प्रकट हो जाते | उस समय सामने रखा हुआ भोजन मेरे लिए बहुत मायने रखता था | आप सोचेंगे क्या भोजन खाना,

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

जीवन से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकता है ? किसी भूखे से यह प्रश्न पूछेंगे तो आपको समझ में आएगा कि एक भूखे गरीब व्यक्ति के लिए भोजन का महत्व जीवन से भी ज्यादा रहता है | मेरी स्थिति लगभग वैसी ही थी | मैं टेबल पर बैठकर भोजन पर टूट पड़ा और जब तक पेट नहीं भर गया मैंने रुकने का नाम नहीं लिया |

दोनों सेवा में लगे हुए थे .....

मेरी थाली में जैसे ही पूरी खत्म होती ..... तुरंत आ जाती .....

जैसे ही हलवा खत्म होता ..... हलवा आ जाता |

जैसे ही सब्जी खत्म होती..... सब्जी आ जाती |

जब मेरा पेट गले तक भर गया तो मैंने संतुष्टि भरी डकार मारी | तब तक मेरे लिए हाथ धोने का पानी आ चुका था | उन लोगों ने मेरा हाथ घुलाया और पोछने के लिए तोलिया भी दिया | यह सब मेरे लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं था .....

अब जब पेट भर चुका था तो स्वाभाविक रूप से अगला काम था सोना | मैं मन ही मन सोच रहा था की अगर सोने मिल जाता तो मजा आता .....

तभी वह फिर से प्रकट हुई ..... उसने मुझसे खाने के बारे में पूछा |

मैंने कहा - बहुत बढ़िया ऐसा खाना तो मैंने आज तक नहीं खाया | आप कौन हो ?

मेरे पूछने पर उसके चेहरे पर अजीब से भाव उभरे | फिर जैसे उसने अपने आप को नियंत्रित किया और बताया कि वह राजनगर की राजकुमारी है | उसे भैरू बाबा से कुछ काम कराना था और वह उसके पास जाना नहीं चाहती थी | इसलिए मेरे माध्यम से भैरू बाबा को बुलाना चाहती थी | मेरे लिए यह जानकारी काफी थी और मैं इस बात के लिए तैयार हो गया कि भैरू बाबा को बुलाऊंगा |

वह युवती फिर मुझे शयनकक्ष तक लेकर आ गई | उसने मुझे कक्ष में छोड़ा और चली गई | शानदार बिस्तर सामने था .....

पेट भरा हुआ था.....

स्वाभाविक रूप से अगला कदम था ..... सोना और मैं एक छलांग में बिस्तर के ऊपर था और दूसरे मिनट में निद्रा देवी की गोद में जा चुका था .....

कमरा मेरे खर्राटों से गूंज रहा था |

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सुंदरी का लावण्य

भरपूर नींद के बाद जब मेरी आंख खुली तो कमरे में संगीत बज रहा था.....

वही सुंदरी बैठकर वीणा बजा रही थी .....

वीणा के मधुर स्वर गूंज रहे थे .....

मुझे संगीत का ज्ञान तो नहीं था लेकिन उसके संगीत में गजब का जादू था..... जिसे सुनते रहने की इच्छा होती है | मुझे जागा हुआ देखकर उसने मेरी ओर देखा और मुस्कुराइ | तब तक दोनों अधेड़ फिर से प्रकट हो चुके थे | एक के हाथ में पानी का जग था और दूसरे के हाथ में तौलिया | उन्होने मेरा हाथ मुंह धुलाया |

उस ने फिर से मेरा हाथ पकड़ लिया | राजमहल जैसे उस भवन में पता नहीं कहां से हल्की-हल्की सफेद रोशनी छाई हुई थी | वह मुझे हाथ पकड़ कर अपने साथ घुमाने ले गयी | राजमहल के बाहर एक भव्य बगीचा बना हुआ था | उस बगीचे के एक किनारे पर एक तालाब बना हुआ था और उस तालाब के बीचो-बीच एक छोटा सा कमरा था | बगीचे के अंदर ढेर सारे सुंदर सुंदर फूल खिले हुए थे और उनकी खुशबू से पूरा राज महल महक रहा था | उन फूलों की आकृति भी अलग थी | लगभग गोभी के फूल जितने बड़े बड़े फूल थे | फूलों का रंग बेहद चटकीला और शोख था | बगीचे के अंदर से उस छोटे कमरे पर जाने के लिए पतला सा गलियारा बना हुआ था |

वह युवती मुझे उस गलियारे से लेकर उस कमरे पर आ गई | उस कमरे में एक बेहद सुंदर सा बिछना बिछा हुआ था | वहां उसने अपने रूप लावण्य का वो नजारा दिखाया , जिसके बाद मैं किसी भी चीज के लिए इंकार करने के काबिल नहीं रहा ...पूरी रात उसी तरह से गुजरी .....

सुबह जब नींद खुली ..... तो फिर वही उपक्रम चला..... स्नान और फिर भोजन फिर नीद .....

फिर रात रंगीन .....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मिशन भैरू बाबा

ऐसे ही कुछ दिन मजे मे गुजरे | अब भैरव बाबा को बुलाना क्या अगर वह उसे रस्सी से बांधकर लाने की बात करती तो भी शायद मैं ले आता |

मैं पूरी तरह से उस सुंदरी के मोह जाल में फस चुका था.....

एक दिन सुबह स्नान के बाद वह मुझे अपने साथ लेकर महल के तहखाने मे ले गयी | तहखाना अंधेरे से भरा हुआ था | उसके हाथ में एक मशाल थी | हम सीढ़ियों से चलते चलते नीचे पहुंचे | वहां पहुंचकर उसने एक गोल चक्कर को घुमाया | गोल चक्कर के घूमते हैं दीवाल का एक हिस्सा दाहिनी ओर सरक गया और वहां पर एक दरवाजा दिखा | हम दोनों दरवाजे से आगे बढ़े |

सामने एक गलियारा बना हुआ था | उसमे से लगभग 200 मीटर चलने के बाद एक और गोल चक्कर दिखाई दिया उसने उसे भी दबाया | जिस जगह पर हम लोग खड़े थे वह सहसा ऊपर की तरफ होने लगा |

उसने मुझसे कहा - मैं तुम्हें वापस गांव के पास छोड़ छोड़ दूंगी | वहीं पर तुमको भैरू बाबा को लेकर आना है | यह ध्यान रखना की रात के 10 बजे के बाद ही आना और वहां पहुंचकर 3 बार ताली बजाना ! मैं खुद आ जाऊंगी |

इतना कहकर उसने फिर अपनी चुनरी मेरे सर पर डाल दी | जब मेरी आंख खुली तो मैं नदी के किनारे वाले बरगद के पेड़ के नीचे पडा हुआ था | मेरे कपड़े वापस वही पुराने वाले थे | राजसी वस्त्र गायब हो चुके थे | मुझे ऐसा लगा जैसे में स्वर्ग से वापस धरती पर आ गया |

थोड़ी देर के लिए मुझे बड़ा दुख हुआ ..... सपने से यथार्थ मे आने में थोड़ा समय लगा !

फिर याद आया कि भैरू बाबा को लेकर जाना है .....

मैं धीरे से उठा नदी में स्नान किया और वापस अपने घर की तरफ चल चल पड़ा .....
रास्ते में गांव के कई लोग मिले | लेकिन मैं किसी को छूने की कोशिश करता था तो उसका स्पर्श नहीं कर पाता था |

उनमे से कोई भी मेरी ओर देखकर कुछ बोल भी नहीं रहा था ....

ऐसा लग रहा था जैसे उनको मैं दिखाई ही नहीं दे रहा था .....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

यह मेरे लिए यह बड़ी आश्चर्यजनक बात थी .....

मैंने एक दो दोस्तों को छूने की कोशिश की लेकिन उनको आभास ही नहीं हुआ ....

गुस्से मे एक दोस्त को लात मारी लेकिन मेरी लात हवा में ही रह गई ....

उसे उसका एहसास ही नहीं हुआ |

अब घबराने की बारी मेरी थी ! क्योंकि जो मेरे साथ हो रहा था ! उसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी.....

मैंने सोचा किसी ना किसी को तो मैं दिखाई जरूर दूंगा ..... इसी तरह से मैंने पूरा गांव का चक्कर मार दिया लेकिन किसी ने मुझे नहीं देखा | यहां तक की स्नान करती और कपड़े बदलती हुई महिलाओं ने भी मुझे नहीं देखा ....

अब मेरी समझ में यह बात आ चुकी थी कि उसने मेरे साथ कुछ न कुछ गड़बड़ झाला किया हुआ था | इसके चलते मेरे गांव वाले मुझे नहीं देख पा रहे थे | काफी देर तक बर्दाश्त करने के बाद मैं रोने लगा | काफी देर रोने के बाद मन थोड़ा हल्का हुआ ...

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

भैरूबाबा

गांव का बैगा था । जो छत्तीसगढ़ के ठेठ आदिवासी इलाके बस्तर से बैगा विद्या सीख कर आया था और गांव में ही अपनी जवान पत्नी के साथ रहता था ।

भैरू बाबा की उम्र लगभग 60 साल की थी और उसकी पत्नी लगभग 30 साल की थी । उसकी पत्नी बेहद खूबसूरत थी । जहां भैरू बाबा सामान्य आदिवासियों की तरह ही काला और मजबूत काठी का था । वही उसकी बीवी एकदम गोरी चिट्टी और बेहद सुंदर थी । उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे स्वर्ग से कोई अप्सरा उतर कर जमीन पर आ गई हो ।

गांव के कई युवकों ने उस पर डोरे डालने की कोशिश भी की थी, लेकिन वह भैरू बाबा के प्रति इतनी समर्पित थी कि उसने किसी को घास भी नहीं डाली ।

गांव वाले आश्चर्य करते थे कि भैरू बाबा में ऐसा क्या है , जिसे देख कर इसने उस बुड्ढे से शादी कर ली । यह एक रहस्य था जिस पर से न तो भैरव बाबा ने कभी पर्दा उठाया और ना ही उसकी पत्नी ने । जब भी उससे शादी के बारे में या उसकी पत्नी के बारे में कुछ सवाल किया जाता वह बात बदल देता या मुस्कुरा कर चुप हो जाता ।

भैरू बाबा तंत्र विद्या में पारंगत था । जैसा कि आप लोग जानते होंगे तंत्र विद्या का सबसे बड़ा क्षेत्र आसाम का कामाख्या या कामरूप देश माना जाता है । अधिकांश तांत्रिक उसी इलाके से अपनी साधना सीखते हैं और सिद्धी प्राप्त करते हैं । छत्तीसगढ़ के आदिवासी इलाके बस्तर का भी तंत्र साधना के क्षेत्र में बहुत जबरदस्त दखल है । अफ्रीका के आदिवासी क्षेत्रों में पाए जाने वाले वुडू नामक तंत्र को दुनिया का सबसे ताकतवर तंत्र माना जाता है ।

बस्तर के तांत्रिक भी अपनी विशिष्ट विद्याओं में माहिर होते हैं । भैरू बाबा को अजीब अजीब सी शक्तियां प्राप्त थीं । बच्चे उसे देख लेते तो उसे घेरकर बैठ जाते । भैरू बाबा को बच्चे पसंद थे । वह उनको कहानियां सुनाते । बच्चे के साथ खेलते और सब मिलकर कई बार गांव से बाहर भी चले जाते | जब वे वापस लौटते थे तो सभी के हाथों में पत्तों से बने हुए दोने होते , और उसमें जलेबी जैसी मिठाई भी होती थी । यह करतब बाबा हमेशा गांव के बाहर जाने पर ही दिखाता था । उसके कंधे पर एक झोला पड़ा रहता था । बच्चे मिठाई

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

की मांग करते और वह उस झोली में से निकाल कर वह सब को देता जाता । मैंने भी कई बार उन मिठाइयों का आनंद लिया था ।

भैरू बाबा को जड़ी बूटियों का भी अच्छा ज्ञान था । गाँव के बच्चों बड़ों को किसी भी प्रकार की नजर लग जाना या भूत पकड़ लेना जैसी समस्या के लिए सभी लोग भैरू बाबा का ही आश्रय लेते थे । बाबा बच्चों को किसी भी प्रकार की समस्या होने पर उसका समाधान चुटकियों में कर देता ।

एक प्रकार से वही गांव का डॉक्टर था । वह दिल का बड़ा अच्छा था । उसकी अपनी कोई संतान नहीं थी लेकिन पूरे गांव के बच्चों को अपनी संतान के समान मानता था । गांव के सारे बच्चे उसकी बात जरूर मानते ।

मैं उसके साथ अक्सर घूमता था और कई ऐसी घटनाओं का साक्षी भी था जो अपने आप में अद्भुत और अविश्वसनीय हैं । एक बार मैं कुल्हाड़ी लेकर चल रहा था और कुल्हाड़ी के साथ गिर पड़ा था । कुल्हाड़ी मेरे दाहिनी जांघ काटती हुई लगभग तीन अंगुल अंदर घुस गई थी । जख्म गहरा था और उस समय आज के समान दवा और डॉक्टर भी आसानी से उपलब्ध नहीं थे । घाव बेहद गहरा था और उसमें से खून का दरिया सा निकल पड़ा था | इतना ज्यादा खून देखकर सब लोग घबरा गए थे | खुद मैं भी बुरी तरह से घबरा गया था और रो रहा था | मुझे तुरंत उठा कर घरवाले बैगा बाबा के पास ले गए | मेरी हालत देखकर वह तुरंत अपने घर के पीछे की तरफ लपका |
अपने झोपड़ी के पीछे तीन पत्तियों वाले एक पौधे से कुछ पत्तियां तोड़ी , जोर जोर से कुछ मंत्र पढ़कर उन पत्तियों पर फूंका और उन पत्तियों का रस मेरे घांव पर निचोड़ दिया । मुझे ऐसा लगा जैसे गर्म लोहे से दाग दिया गया हो । दर्द के मारे मैं छटपटा उठा था । बाबा ने साथ आए लोगों को मेरे हाथ पैर पकड़ने के लिए कहा । मैं तड़प रहा था । चार लोगों ने मिलकर मुझे पकड़ लिया | मैं और जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था । लेकिन मुझे पकड़ने वालों ने नहीं छोड़ा । भैरू बाबा ने जिन पत्तों को निचोड़ कर रस निकाला था , उन्हीं पत्तियों को मसल कर मेरी चोट पर रख दिया और सागौन के पत्ते से लपेट दिया । उसके बाद कपड़े से बांध दिया । आधे घंटे तक मुझे जलन होती रही लेकिन मुझे पकड़कर रखने वालो ने मुझे उसी प्रकार पकड़े रखा ।

आधे घंटे होते होते जलन शांत होने लगी । बाबा ने मुझे सख्त ताकीद की कि किसी हालत में यह गीला नहीं होना चाहिए । अगर गीला हो गया तो पक जाएगा, फिर महीना भर चल नही पायेगा । उस दिन मैं डर के मारे शौच के लिए भी नहीं गया था । दूसरे दिन सुबह बाबा घर पर आया और उन्होंने पट्टी को निकाल दिया । सबकी आंखें फटी की फटी रह गई जब

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उन्होंने देखा कि कटे हुए दोनों हिस्से आपस में जुड़ चुके थे । सिर्फ एक लाइन दिखाई दे रही थी जैसे उस घांव को आपस मे गोंद लगाकर चिपका दिया गया हो ।

एक हफ्ते के अंदर उस दवा के प्रभाव से वह पूरा घाव बराबर हो गया | देखने से ऐसा लगता ही नहीं था कि मेरी जाघ कही पर दो हिस्सों में कटकर अलग हुई थी । यहां तक कि उसके बीच की लाइन भी गायब हो चुकी थी और त्वचा सामान्य हो गई थी । ऐसा अद्भुत और आश्चर्यजनक कार्य केवल बाबा ही कर सकते थे । औषधियों के बारे में उनकी जानकारी की सभी तारीफ किया करते थे ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

भैरू बाबा से ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व का स्वामी था भैरू बाबा और उसी भैरू बाबा को मुझे उस परेतिन के पास लेकर जाना था |

अब आखिरी संभावना भैरू बाबा था | मैंने सोचा जब उस सुंदरी ने मुझे उसके पास भेजा है तो वह जरूर मुझे देख लेगा | यह सोचकर मैं उसके घर के पास तक पहुंचा | बाहर उसकी पत्नी मिल गयी | बाबा की पत्नी ने कहा कि वह बाहर गए हैं और शाम तक आयेंगे | मैं वापस पलट कर आने लगा लेकिन तभी मुझे ख्याल आया अरे मुझे तो कोई भी नहीं देख पा रहा फिर इन्होंने मुझे कैसे देख लिया....

यह मुझे समझ नहीं आया इसलिए मैं फिर से वापस लौट कर भैरू बाबा के घर पहुंचा | वहां पहुंचकर मैंने भैरू बाबा की पत्नी से इस विषय पर जानना चाहा तो उसने सीखे पढे होने की बात करके टाल दिया और मैं वापस लौट गया । अब मैं भैरू बाबा की झोपड़ी की तरफ जाने वाले रास्ते पर इंतजार कर रहा था कि कब भैरू बाबा वापस लौटे और मैं इस विषय पर बात कर सकूं ।

शाम के लगभग 7 बजे भैरू बाबा घर लौटा | जैसे ही घर के पास आया उसने मुझे देखा और वहीं रुक गया । उसकी पत्नी तब तक झोपड़ी के अंदर जा चुकी थी । मुझे देख कर भैरू बाबा के चेहरे पर विचित्र से भाव प्रकट हुए ।
उन्होंने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया और तेजी से जंगल की ओर चल दिए । जंगल के बीच में एक बड़ा खंडहर था । वह खंडहर किसी पुराने महल का हिस्सा था जो लगभग पूरी तरह से टूट चुका था | उसके दालान में एक बड़ी गोल पत्थर की शिला रखी हुई थी । उसका आकार कुछ-कुछ कछुए के जैसा था । शायद समय के प्रभाव और मौसम की मार ने उसके सिर को गायब कर दिया था इसलिए केवल गोल वाला भाग नजर आता था । मैंने बचपन में कई बार खेलते खेलते जंगल में आने पर इस खंडहर को भी देखा था ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

रहस्यमय खंडहर

बाबा के साथ मैं उसी खंडहर में पहुंचा बाबा ने उस खंडहर के बाहर खड़े होकर कुछ अजीब सा मंत्र जाप किया । उस समय रात के लगभग 8 बज चुके थे । रात की अंधेरी चादर चारों ओर फैल चुकी थी । बाबा की हरकतों से ऐसा लग रहा था कि वह महल के चप्पे-चप्पे से वाकिफ है । बाबा ने मुझे पीछे आने का इशारा करके उस गोल पत्थर की ओर बढ़ गया । बाबा ने उस पत्थर को झुकाया जैसे ही पत्थर को झुकाया जमीन के फरशी पत्थरों में से एक बड़ा पत्थर अपनी जगह से हटने लगा और एक आदमी के जाने लायक रास्ता बन गया ।

बाबा उसके अंदर चला गया । बाबा के पीछे पीछे मैं भी अंदर चला गया । अंदर घुसने के बाद वह दरवाजा बंद हो गया है ।

बाबा ने मशाल को दीवाल पर खोस दिया और परेशानी वाली मुद्रा में बैठ गया ।

मैंने उससे बात करने की कोशिश की .....

बाबा बोला - रामू तू कहां जाकर फस गया । बचपन से तुझे कहता था उलटे सीधे काम मत कर , मगर तेरी समझ में कभी कुछ आया ही नहीं । अब बिना शरीर के घूम रहा है ।

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था | मैंने बाबा से कहा कि पहले आप मेरी कहानी तो सुन लो । बाबा का गुस्सा थोड़ा शांत हुआ और उसने मुझे बताने को कहा । मैंने शुरू से लेकर आखिरी तक पूरी कहानी एक ही सांस में सुना डाली ।

बाबा की पेशानी पर बल पड़ गए | उसने कहा - तूने संबंध भी बना लिए । अब तो तू उस परेतिन से बच नहीं पाएगा ।

मैंने बाबा के सामने हाथ जोड़े और कहा - बाबा अब आप ही कुछ उपाय निकालो ।

वैसे तो मैं परेतिन की कैद में भी खुश था क्योंकि मुझे तो सब कुछ मिल रहा था । लेकिन गांव लौटने के बाद जब शरीर ना होने का आभास हुआ तब से मैं छुटकारा पाने की जुगत लगाने लगा । इस स्थिति में बाबा के अलावा कोई भी मुझे नहीं बचा सकता था । यह बात मेरी समझ में आ चुकी थी, इसलिए मैं बाबा के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा ।

बाबा सामने रखी चौकी पर चढ़कर बैठ गया | चौकी पर बैठते ही उसका सर जोर जोर से हिलने लगा जैसा कि देवता के आने पर होता है | यह मेरा देखा हुआ था क्योंकि बैगा लोगों

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

की यह एक सामान्य प्रक्रिया है जिससे यह आभास होता है कि उसके शरीर में कोई देवता आ गया है ।

थोड़ी देर तक उसका सर जोर जोर से हिलता रहा | उसके बाद वह शांत हो गया | ऐसा लगा जैसे किसी ध्यान की अवस्था में चला गया हो | लगभग 10 मिनट के बाद उसने अपनी आंखें खोली और आवाज निकली - रामू तू बहुत बुरी तरह फंस गया है और तेरी वजह से अब मेरा नुकसान होगा | तू मेरे दोस्त का बेटा है मैं तुझे छोड़ भी नहीं सकता | चल आज तुझे मैं वह सच्चाई बताता हूं जो मैंने आज तक किसी को नहीं बताई । मेरी पत्नी वास्तव में कोई स्त्री नहीं वह एक परेतिन है जिसे मैंने पकड़ कर रखा हुआ है | उसी को छुड़ाने के लिए वह सुंदरी तेरे माध्यम से मुझे बुलाना चाहती है ताकि तेरे बदले में मैं इसको छोड़ दूं ।

अब चौकने की बारी मेंरी थी | यानी बाबा की पत्नी भी एक परेतिन थी । वह बिल्कुल सामान्य महिला की तरह ही रहती थी । सारे कामकाज करती थी और उसे देख कर मुझे या गांव वालों को किसी को भी कभी यह नहीं लगा कि वह परेतिन है । आज बाबा से यह सच जानकर मेरी आंखें फटी की फटी रह गई । अब मुझे समझ आया कि उसने मुझे कैसे देख लिया था | उसके चेहरे पर वह रहस्यमई मुस्कुराहट क्यों आई थी ।

बाबा फिर बोले - तू मेरी बात ध्यान से सुन ! मुझे तेरे साथ जाना तो पड़ेगा क्योंकि मैं तुझे इस हालत में नहीं देख सकता । मैं तुझे जो रहस्य बता रहा हूं उसके द्वारा दो चीजें हो सकती हैं । या तो वह परेतिन भी तेरे साथ रहने लग जाए या फिर मेरी वाली परेतिन भी मुक्त हो जाए .....

अब हमारे पास कोई रास्ता बचा नहीं है । अगर तू समझदारी से काम लेगा तो वह परेतिन तेरे साथ जिंदगी भर पत्नी बन कर रहेगी और अगर तू चूक गया तो मुझे भी अपनी पत्नी से हाथ धोना पड़ेगा । बोल क्या तू तैयार है ?

मेरे पास कुछ बोलने के लिए नहीं था | इसलिए मैंने अपने सर को हिलाया और सहमति जताई ।

बाबा ने फिर बोलना चालू किया - रामू यह बात तू जान ले कि कोई भी परेतिन तब तक वश में रहती है जब तक उसका कपड़ा तेरे पास रहेगा । मैंने भी अपनी वाली को बस में करने के लिए उसकी चुनरी संभाल कर रखी हुई है । इतना बोल कर उन्होंने अपने झोले में से एक चुनरी निकालकर दिखाइ और बोले - जब तक यह मेरे पास है तब तक वह मुझे छोड़कर नहीं जा सकती | उसे मनुष्य रूप में ही रहना पड़ेगा । मैं तेरे साथ अगर अभी चला गया तो तुझे यह अवसर नहीं मिलेगा इसलिए तुझे भी किसी उपाय से वापस जाना पड़ेगा और कैसे भी करके उसके वस्त्र उठाने पड़ेंगे । मैं तुझे एक जादुई गोली देता हूं वह गोली तू

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अपने पास रखना । जेसे ही उसकी चुनरी तेरे हाथ लग जाए इस गोली को अपने मुंह में डाल लेना मैं तुझे बाहर निकाल लूंगा । लेकिन इस गोली का पता उसे नहीं चलना चाहिए | यह तभी संभव है जब तू उसका विश्वास पा ले और उसको ऐसी जगह पर छुपाए जहां लगातार पानी गिरता हो । मेरी विद्या उसके लोक में केवल एक पहर तक परेतिन के लोक में काम करेगा | उसके बाद वह सब कुछ जान जाएगी । इसलिए तुझे एक पहर से पहले इस गोली को छुपा देना है ।

बाबा आगे बोले – तेरी आत्मा को वह फिर तुझे तेरी देह में प्रवेश करा देगी | जैसे वह तुझे देह प्रदान करेगी | वह तेरे साथ फिर से संबंध बनाएगी | तब तू जागरूक रहना अगर होश में रह पाया और उसका वस्त्र तू हासिल कर पाया तो इस गोली को मुंह में डाल देना । गोली को मुंह में डालते ही मैं तुझे वापस इस लोक में खींच लूंगा ।

मैं भारी असमंजस में था, लेकिन मेरे पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था | मेरे अपने शरीर का कोई अता पता नहीं था । मैं खामोशी से बाबा की तरफ देखता रहा ।

इतना समझाने के बाद बाबा ने आगे कहा - तेरी देह से अलग करके वह तुझे सिर्फ 24 घंटे के लिए बाहर रख सकती है । उसके बाद उसे वापस अपने पास बुलाना ही पड़ेगा । अगर वह वापस नहीं बुलाएगी तो तेरी देह मुर्दा हो जाएगी और तू उसके किसी काम का नहीं रहेगा ....

बाबा के रहस्य उद्घाटन से मेरे प्राण मुह की ओर आ रहे थे ।

मै सोच मे पद गया , यानी अगर उसने मुझे वापस नहीं लिया तो..... मैं निपट गया ।
एक हफ्ते के मजे के बदले में मौत बहुत बड़ी सजा थी.....
लेकिन सच्चाई मेरे सामने मुंह खोलकर खड़ी थी और मैं उसका सामना करने के लिए मजबूर था ।

मेरे पास कोई दूसरा रास्ता बचा ही नहीं था । वापस जाना ही एकमात्र रास्ता था ...

जिस पर कई सम्भावना थी ....
पहला यह कि परेतिन के लोक में ही जिंदा बच जाऊं ।
दूसरा यह कि वह परेतिन मेरे बस में हो जाए ।।
तीसरा यह कि परेतिन मुझे ना मिले लेकिन मैं जिंदा उस लोक से वापस आ जाऊं ।

आख़िरी संभावना यह थी कि भैरू बाबा को अपनी परेतिन मेरे बदले में वापस करनी पड़ जाए ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सब तरह से विचार करके मैंने जाने का निर्णय ले लिया ।

जाने से पहले मैंने बाबा से पूछा - मैं उसे क्या बताऊंगा कि आपको क्यों नहीं ला पाया ?

भैरू बाबा ने बताया - उसे बता देना की भैरू बाबा गांव नहीं लौटा है इसलिए मैं वापस लौट आया । मैंने अपने घर को बांध दिया है, इसलिए वह मेरी पत्नी से मानसिक संबंध नहीं बना पाएगी और उसे कुछ जानकारी नहीं होगी । तेरे आते तक मैं भी इसी तहखाने में रहूंगा | मुझे भी कुछ तैयारी करनी पड़ेगी ताकि तुझे वापस खींच सकूं । कोशिश करना कि तू उसके वस्त्र के साथ वापस आए लेकिन अगर ऐसा नहीं कर पाया तो शरीर मिलते ही गोली लेकर मुंह में डाल लेना मैं तुझे वापस खींच लूंगा ।

भैरू बाबा ने सावधान किया - कोई ऐसा व्यवहार मत करना जिससे उसको तुझ पर शक हो जाए । जैसे ही अंदर पहुंचेगा जल्दी से जल्दी गोली को पानी वाली जगह पर छुपा देना । याद रखना एक पहर के बाद वह गोली के बारे में सब कुछ जान जाएगी ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

महल मे वापसी

मैं लाचार और विवश कदमों से वापस जाने के लिए तैयार होने लगा, तभी बाबा ने मुझे एक झापड़ मारा | झापड़ लगते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा पूरा शरीर झनझना गया हो | जब मुझे होश आया तो मैं मसान घाट के पास खड़ा था | उस समय रात के लगभग 11 बज चुके थे क्योंकि चांद आसमान में आधी दूरी पार करने वाला था | वहां पहुंचकर मैंने तीन ताली बजाई मुझे झटका सा लगा और मैं वापस उसी राजमहल के बिस्तर के पास पहुंच गया | उसी बिस्तर पर मेरा शरीर पड़ा हुआ था वह परेतिन भी वहां पर मेरे इंतजार में बैठी हुई थी .....

उसकी आंखें गुस्से में लाल थी ..... जैसे मुझे कच्चा चबा जाएगी ।

उसने गुर्रा कर मुझसे पूछा - बाबा कहां है ?

मेरी सिट्टी पिट्टी पहले से ही गुम थी । उसका रौद्र रूप देखकर मेरी बची खुची हवा भी निकल चुकी थी । मैं डर से थरथर कांप रहा था ! मेरी हालत देखकर शायद उसे तरस आया !

उसने मुझसे दोबारा पूछा - बाबा कहां है ?

मैंने डरते सहमते जवाब दिया - बाबा तो घर नहीं आया । बाबा की जोरू ने बताया कि वह तो नहीं आया है ।

इतना सुनते ही उसने अपनी आंखें मूँदी ! अपने हाथ को अजीब ढंग से हिलाया ! ऐसा उसने दो तीन बार किया ! उसके माथे पर बल पड़ गए ! शायद उसने बाबा की जोड़ी से संपर्क करने की कोशिश की होगी और संपर्क नहीं हो पाया होगा ।

मुझे लगा बेटा रामलाल अब तो तू बेभाव निपट गया....

पांच सात मिनट में उसकी भाव भंगिमा शांत हुई और उसने दोनों हाथ आसमान में उठाए और मुझे बिस्तर पर चढ़ने का संकेत किया | जैसे ही मैं बिस्तर पर चढ़ा मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपने शरीर में समाता जा रहा हूं और वापस मै सशरीर हो गया .....

मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं बिस्तर से नीचे छलांग लगाऊँ और खुशी में कूद-कूद कर नाचू ! लेकिन डर के मारे वह भी नहीं कर पा रहा था ... और शांत लेटा हुआ था ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उस सुंदरी ने फिर से ताली बजाई दोनों अधेड़ फिर से प्रकट हो गए उनको आदेश दिया - इसे नहला कर लाओ ! कपड़े मत पहनाना ! दोनों मुझे लेकर चल पड़े ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

काले पानी का झरना

स्नानघर में ना जाकर वह मुझे एक झरने की ओर ले कर गए । यह मैंने पहले नहीं देखी थी । इस झरने का पानी बिलकुल काला था । उन्होंने कपड़े उतारकर उस झरने मैं मुझे पानी के नीचे बैठा दिया । मुझे बिठाकर दोनों कुछ लेने चले गए ।

यही मौका था ।

जब मैं कुछ कर सकता था ।

जहां उन्होंने मुझे बैठाया था उस पत्थर को मैंने टटोला .....

सौभाग्यवश उसके नीचे एक गड्ढा मिल गया ....

मैंने गोली को उस गड्ढे में रख दिया .....

मेरा एक काम पूरा हो चुका था.....

जिससे मेरी हिम्मत थोड़ी बढी । कम्पकम्पाहट थोड़ी सी कम हुई ! लेकिन डर अब भी लग रहा था .....

पानी का रंग बिल्कुल काला था .... बिल्कुल वैसा जैसे किसी नाले का होता है ....

मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे लोग मुझे साफ करने के लिए आए हैं या गन्दा करने के लिए ?

डर के मारे मेरे मुंह से बोल भी नहीं फूट रहे थे ।

जो हो रहा है होने दो , सोचकर मै बैठा रहा .....
थोड़ी देर के बाद वह दोनों आदमी वापस लौटे । उनके हाथ में गहरे नीले रंग का कोई लेप था और एक धूपदान था ।

लेप उन्होंने मेरे अंग पर लगा दिया.....

उसके बाद धूप का धुआ मेरे शरीर के सभी हिस्सों पर लगाने लगे ।

जैसे जैसे धुआँ शरीर में लगता ऐसा लग रहा था , शरीर में ताकत बढ़ती जा रही हो | लगभग 10 मिनट उन्होंने ऐसा किया | मुझे ऐसा लगा .....जैसे मैं बहुत बड़ा पहलवान हो गया हूं .....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

शरीर के अंग अंग से ताकत फूट रही थी....

मैंने इधर उधर देखा और धीरे से उनसे पूछा .... यहां से निकलने का कोई उपाय नहीं है क्या ?

उसने दबी जबान में कहा - जब तक जवानी है मजे कर लो ! उसके बाद हमारे जैसे गुलामी करना ! जो यहां आ गया यहीं मर गया । यहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं है । जब तक यह परेतिन किसी के बस में नहीं हो जाएगी । तब तक हम भी ऐसे ही गुलाम रहेंगे .....

मैंने उनसे पूछा - पिछली बार तो तुम लोगों ने साफ पानी से नहलाया था इस बार काले पानी से क्यों नहलाया ?

उन्होंने बताया – जो इस लोक से बाहर जाता है उसके वापस आने पर इसी पानी से स्नान कराया जाता है , ताकि उसकी ताकत बढ़ जाए और परेतिन को खुश कर सके ।

वे दोनों मुझे निर्वस्त्र अवस्था में ही लेकर आगे बढ़े .....

मैं थोड़ा सावधान था और रास्ते का ध्यान रखने की कोशिश कर रहा था |

मै यह सोच रहा था कि मुझे मौका मिलते ही वापस इसी जगह लौटना था ताकि गोली मुह मे डालकर यहाँ से बाहर निकाल सकूँ | इसलिए मैं बीच बीच में रुक कर कुछ कुछ चीजों को निहारने लगता था ताकि वे मेरी याददाश्त में रह सके .....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सुंदरी की प्रणय लीला

लगभग 100 कदम चलने के बाद वह बगीचा आ गया , जिसमें वह सुंदर सा कमरा बना हुआ था । उन दोनों ने मुझे उस कमरे के पास ले जाकर छोड़ दिया और वापस चले गए । वह सुंदरी खड़ी हुई थी ! उसमें मुझे रुकने का इशारा किया ! उसके हाथ में चमकदार छड़ी जैसी चीज थी । छड़ी से उसने मेरे हर अंग को स्पर्श किया ! जैसे टेस्ट कर रही हो कि कुछ गड़बड़ तो नहीं है ! जब वह पूरी तरह से संतुष्ट हुई , तब फिर उसने भी अपने वस्त्र उतारे ..... मेरी नजर उसकी चुनरी पर थी जो मेरा लक्ष्य थी ! जिसे मुझे लेकर जाना था ताकि उसे वश मे कर सकूँ .....

वस्त्र उतारने के बाद वह मेरे करीब आई | उसके पास आते ही मुझे उसके देह से मादक गंध उठती हुई महसूस हुई | उसने मेरे देह को अपने देह से स्पर्श कराया और फिर आलिंगन चुंबन के साथ उत्तेजना परवान चढ़ती चली गयी |

उसके बाद जो रासलीला का दौर चालू हुआ तो रात भर चला .....

सुबह तक दोनों पस्त हो चुके थे.....

लेकिन मैं सावधान था ! क्योंकि मुझे पता था कि मुझे यह अवसर दोबारा नहीं मिलने वाला .....

मैं अपनी जगह से उठा ! मेरे उठते ही उसकी आंखें भी खुल गई ! उसने अविश्वास भरी नजरों से मुझे घूरा और आँख हल्की बंद कर झिर्री से देखने लगी , ताकि मुझे लगे कि वह सो गयी है | मैंने अंगड़ाई ली और कमरे के दरवाजे तक गया और बाहर तालाब के पास पैर डाल कर बैठ गया |

मेरे ऐसा करते ही शायद वह निश्चिंत हो गई और पलट कर सो गई | मै तुरंत उठा और कमरे में आया तभी उसने फिर आंख खोलकर देखा | मैं उसके बगल में लेट गया और फिर से एक दौर चला | उसके बाद वह फिर से निश्चिंत होकर सो गई |

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

चुनरी की चोरी और गोली

उसकी चुनरी पलंग के पास नीचे पड़ी हुई थी | मैं हाथ बढ़ाकर उसे उठा सकता था .....

लेकिन दिक्कत ये थी कि मैं खुद निर्वस्त्र था और उसे छुपाने लायक कोई जगह भी नहीं थी ....

तभी मुझे कमरे के बाहर वह अधेड़ व्यक्ति दिखाई दिया ! उसने अपने हाथ में रखी हुई गोली मुझे दिखाई !
अरे ! यह तो वही गोली है जो मैंने छुपाई थी ! मेरे दिमाग को झटका लगा !

अवसर मेरे पास था ! मैंने एक झटके में जमीन से चुनरी उठाई और उस व्यक्ति की ओर दौड़ा !

अभी मैं कमरे के बाहर भी नहीं निकल पाया था कि सुंदरी की दहाड़ गूंजी - ठहर जा वहीं ! नहीं तो भस्म कर डालूंगी ।

तभी उस अधेड़ व्यक्ति ने गोली मेरी तरफ उछाल दी | मैंने उसे हवा में ही पकड़ा और सीधे मुंह में डाल दिया ,,,,,
सुंदरी को विश्वास नहीं हुआ कि उसी के आदमी ने उसे धोखा दिया .....

उसकी आंखों से आग की लपट निकली और वह आदमी स्वाहा हो गया .....

लेकिन तब तक गोली काम कर चुकी थी और मैं वहां से गायब हो चुका था.....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बाबा की माया

प्रेतिन के लोक से गायब होने के बाद मैं सीधा खंडहर में बाबा जी के सामने प्रकट हुआ | बाबाजी अपनी पूजा में लीन थे | उनके सामने हवन कुंड धधक रहा था और कुछ अजीब अजीब सी चीजें सामने रखी हुई थी | जिन से वे हवन कर रहे थे ।

बेहद बढ़िया खुशबू फैली हुई थी । उनके सामने 2 आसन बिछे हुए थे | जिसमें एक में भैंस का चमड़ा था दूसरे में गधे का चमड़ा बिछा था ।

बाबा ने मुझे भैंस के चमड़े वाले आसन पर बैठने का इशारा किया | मैंने उन्हें चुनरी दिखाई उन्होंने उसे लेकर चुपचाप बैठने का इशारा किया ! मैं बैठ गया .....

बाबा का मंत्र जाप चालू था ! बीच बीच में वह बाजू में रखी हुई सामग्री आग में डालते जाते थे ।

मैं अभी भी निर्वस्त्र था ....

बाबा ने मुझे उस चुनरी को अपनी कमर में लपेट कर बैठने का निर्देश दिया .....

मैंने उसे लूंगी की तरह लपेट लिया और आसन पर बैठ गया ।

लगभग आधे घंटे तक अपनी कार्यवाही करने के बाद बाबा ने विश्राम दिया |
वे मेरी ओर देख कर मुस्कुराए और बोले - रामू तेरी तो निकल पड़ी । अब तू चुपचाप अपने घर जा । यह दूसरी धोती पहन ले लेकिन चुनरी को किसी के हाथ ना लगने देना । एक बात और ! इसे धोने की गलती भी मत करना उसकी और तेरी देह गंध इसमें से मिट जाएगी और वह मुक्त हो जाएगी ..... इसे छुपा कर रखना कितना भी नाज नखरा दिखाए ! भूल कर भी उसे मत देना । जिस दिन तू ने उसे दे दिया ..... वह वापस अपनी योनि में चली जाएगी ।

मेरे मन में लड्डू फूट रहे थे क्योंकि गांव वालों की नजर में मैं एक मामूली चरवाहा ही था । लेकिन अब एक बेहद सुंदर औरत मेरी बीवी बनने वाली थी । उस सुंदरी की टक्कर की कोई औरत गांव में नहीं थी । भैरू बाबा की पत्नी भी सुंदरी की तुलना में 19 ही बैठती थी | मैं सोच सोच कर गर्व से फूला नहीं समा रहा था ! लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह मेरे पास आएगी कैसे ?
बाबा मेरे मन की बात शायद समझ गए .....
उन्होंने कहा - तू चिंता मत कर ! घर पहुंच ! वह अपने आप तेरे को ढूंढते हुए आएगी ....

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बाबा की बात सुनकर मुझे यकीन तो नहीं हुआ ! लेकिन ! अब तक जो हो रहा था ! वह भी यकीन करने लायक नहीं था !

मैं वापस लौटने के लिए तैयार हो रहा था । धोती पहनने के बाद मैंने उस चुनरी को कस कर अपनी कलाई पर बांध लिया और अपने घर की ओर जाने के लिए बाबा की ओर देखा ।

बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया । जब मैं उनके पास पहुंचा । उन्होंने अपने जादुई डंडे को मेरी पीठ पर दो बार लगाया और मेरे सर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया .....

वह डंडा मेरे सामने सामने हवा में चलने लगा ! बाबा ने मुझे उसके पीछे पीछे जाने का इशारा किया । मैं डंडे के पीछे हो गया । डंडा मध्यम गति में हवा में आगे बढ़ रहा था और मैं उसके पीछे पीछे चल रहा था ।

जिन सीढ़ियों से मैं नीचे उतरा था उसी सीढ़ियों से वापस ऊपर चढ़कर मैं महल के बाहर आ गया । मुझे बाहर निकाल कर डँडा फिर से तहखाने में बाबा के पास चला गया ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

गाँव वापसी

मैं कुछ देर वहां खड़ा रहा, फिर वापस अपने गांव की ओर चल पड़ा । लगभग आधी दूरी तय करने पर मुझे अपना मित्र खोरबहरा इमली के पेड़ पर बैठा हुआ मिला ।

उसने मुझे आवाज लगाइ - ए रामू ! तू कहां चला गया था ?

इतना सुनते ही मेरे प्राणों में प्राण आए कि अब मैं सामान्य आदमी बन चुका हूं और दूसरे लोग मुझे देख सकते हैं ।

खोरबहरा पेड़ से उतर मेरे पास आया और उसने मुझे पहले गले लगाया और पूछा - पिछले 15 दिन से तू कहां गायब था ?

अब मैं उसे क्या बताता ।

मैंने कहानी बनाई कि दूसरे गांव गया था ! वहां समय लग गया ! इसलिए नहीं आ पाया । अपने गांव वालों को भी यही कहानी सुनाई | इस प्रकार गांव वालों से मिलते जुलते मैं अपने घर पहुंचा ।

अपनी चारपाई पर फैल कर सोने का मजा दुनिया की किसी दूसरी चीज में नहीं है । यह मुझे उस दिन पूरी तरह से समझ में आया । मैं अपनी चारपाई पर फैल गया और ना जाने कब नींद लग गई और सो गया ।
सुंदरी की चुनरी अभी भी मेरे हाथ पर बंधी हुई थी | खाने की खुशबू से मेरी नींद मे खलल पड़ा । जैसा कि आप लोग जानते हैं - खाना मेरा सबसे बड़ा शौक था ! जैसे ही खाने की खुशबू आई ! मेरी नींद खुल गई । मैं उठ कर रसोई की ओर गया ! खुशबू वहीं से आ रही थी । वहां सुंदरी एक थाली में रोटी बनाकर रखती जा रही थी ।

आज भी में याद करता हूं तो वह दृश्य मेरे सामने आ जाता है । सुंदरी ने बड़े प्रेम से मुझे भोजन कराया और फिर रात आई रात की बातें हुईं, और ऐसे ही रात गुजर गई ।

सुबह बाबा और उसकी जोरू ने गांव में सबके सामने हमारी शादी करवा दी .....

बाबा की जोरू ने सुंदरी को अपनी चचेरी बहन बताया और कुछ अजीब से गांव का नाम भी बताया....

कुल मिलाकर ! उस समय के हिसाब से ! गांव वालों ने स्वीकार कर लिया ! कि मैं और सुंदरी पति पत्नी है ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

भैरू बाबा ने धीरे-धीरे मुझे कुछ विद्या भी सिखाई । धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता रहा । पति पत्नी के रूप में जो सुख बनता है ! वह पूरा सुख मुझे भरपूर मिला ।

रात होने के बाद जब पूरा गांव सो जाता था ! तो मेरी कुटिया राजमहल बन जाती थी ! उसके बाद सुंदरी और मेरी प्रणय लीलाएं प्रारंभ होती । कामसूत्र का शायद ही कोई सूत्र बचा होगा जो सुंदरी के साथ मैंने नहीं जाना हो ! वह जितनी अद्भुत थी उसका प्रणय भी उतना ही अद्भुत था .....

सुंदरी ने इस बीच में कई बार अलग-अलग तरीकों से मुझसे अपनी चुनरी वापस हासिल करने की कोशिश की ! लेकिन मैंने उसे नहीं दिया । चुनरी ना देने पर वह गुस्सा जरूर हो जाती थी ! लेकिन बाद में ! खुद मान जाती थी ।

हमारे विवाह के लगभग 5 साल बाद सुंदरी ने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया । हमने उसका नाम रखा भोला । दूसरे साल एक और बेटा पैदा हुआ । जिसका नाम चंदन रखा गया ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बाबा की विदाई

चंदन के 6 महीने के होने पर एक दिन बाबा ने मुझे अपने कुटिया पर बुलाया । बाबा ने अपनी जोड़ी को गांव से कुछ सामान लाने के लिए भेज दिया ।

एकांत में बाबा ने मुझे बताया – मैं एक हफ्ते के बाद यह गांव छोड़कर जाने वाला हूँ । मुझे वापस बस्तर लौटना है | अपना आखिरी समय मैं वहीं गुजारना चाहता हूँ |

यह मेरे लिए बहुत दुख की बात थी ! बाबा के रहने से मुझे अनाथ होने का एहसास नहीं होता था ।
मुझे बाबा ने अपनी आयुर्वेद और तंत्र विद्या सिखा दी थी । जिसके कारण गांव के लोग अब मेरे पास भी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आने लगे और मैं उनकी मदद करने की कोशिश जरूर करता था |

खैर....

एक हफ्ते के बाद बाबा गांव छोड़कर चला गया । उसने सरपंच को बता दिया था कि उसकी सारी चीजें अब मेरी होगी । सरपंच ने अगले दिन मुझे गांव के सामने बुलाकर यह सारी बातें कह दी । अब भैरू बाबा की झोपड़ी जमीन सब मेरी थी .....

ऐसे ही धीरे-धीरे समय बीतता गया । बाबा के पास जमीन थी और गाय बैल की जोड़ी भी थी तो अब मैं चरवाहे से किसान बन चुका था ।

सारे गांव की फसल मे सबसे बढ़िया फसल मेरे खेतों में होती थी । क्यों होती थी , यह आप लोग जानते हैं । धीरे धीरे मैं भी गांव के प्रतिष्ठित लोगों में गिना जाने लगा ....

यह सब हुआ सुंदरी के आगमन से ! सुंदरी ने न सिर्फ गांव के महिलाओं के साथ अच्छे संबंध बनाए हुए थे ! वही गांव के बुजुर्ग भी उसे बहुत प्यार करते थे । उसका व्यवहार बहुत अच्छा था । सभी मुझे बहुत सौभाग्यशाली मानते थे जो मुझे ऐसी गुणवती पत्नी मिली थी ।

केवल मैं जानता था कि क्या रहस्य है .....

धीरे-धीरे उसने चुनरी की बात करना छोड़ दिया । बात आई गई हो गई । समय गुजरता गया और बच्चे अब बड़े हो चुके थे । बड़े होने पर लड़की देखने की प्रक्रिया चालू हो गई । पास के गांव के एक ही परिवार से दो बहनों के साथ रिश्ता तय हुआ । शादी बड़े धूमधाम से संपन्न होने के बाद दोनों बहुओं को लेकर हम अपने गांव लौट आए ...

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

गांव वापस आने पर घर में महिलाओं का नृत्य संगीत का कार्यक्रम चल रहा था । सभी ने सुंदरी को नाचने के लिए कहा !

उसने कहा – मेरी शादी वाली पहन कर ही नाचूँगी । इनसे मांग लाओ ...

पड़ोस की भाभी ने आकर कहा - आप सुंदरी की शादी वाली चुनरी उसे वापस कर दो | उसके बिना वह नहीं नाचेगी बोल रही है ।

मैंने पहले बात को टालने की कोशिश की | कुछ देर मे सभी महिलाएं वही बात करने लगी तो मैंने भी सोचा कि अब सब कुछ हो चुका है । यह कहां जाएगी ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

आखिरी नृत्य

मैं अपने कमरे मे गया ....

मैंने अपना खुफिया बक्सा खोला .....

उसमे से मैंने चुनरी निकाली और सुंदरी को ले जा कर दे दी ....

चुनरी मिलते ही सुंदरी खुश हो गई ।

उसने कमरे में जाकर श्रंगार किया .....

और बाहर आकर महिलाओं के साथ मिल कर नाचना प्रारंभ कर दिया ।

ताल के साथ ताल मिलाकर वह नाचने लगी .....

बाकी महिलाएं उसके साथ नाचती रही .....

सुंदरी की तेजी और उसका नाच दोनों ही ऐसा था कि वह ज्यादा देर तक साथ नहीं दे पाईं .....

लगभग घंटे भर नाचने के बाद सभी महिलाएं थक गई....

लेकिन सुंदरी उसी तरह नाचती रही .....

पूरे गाँव वाले आंखे फाड़ फाड़ कर देख रहे थे .....

नाचते-नाचते सुंदरी के नाचने की गति बढ़ती चली गई .....

वह चकरघिन्नी की तरह चक्कर काट काट कर नाच रही थी ....

नाचते-नाचते सुंदरी अचानक गायब हो गई.....

उसके बाद वह किसी को नहीं दिखी उसके जाने के बाद रामलाल का स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगा साल भर के अंदर रामलाल स्वर्गवासी हो गया । रामलाल के दोनों बेटे और बहूऐं गांव

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

में ही रही और उनकी संताने और परिवार सामान्य परिवार की तरह ही चलता रहा । आर्थिक समृद्धि परिवार के साथ बनी रही……

॥ श्री गुरुचरणार्पणम ॥

अनिल शेखर "अमस"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official